बहुत ही सहज है राजयोग...

जो 'बहुत ही सहज है राजयोग' टॉपिक चल रहा है, जिसमें पिछले अंक में हमने परमात्मा को प्रत्यक्ष करने के लिए कि परमात्मा ये हो सकता है...! या परमात्मा ये हो सकता है...! इस बारे में चार कसौटियों की चर्चा की। इस अंक में हम पाँचवी कसौटी व अन्य मान्यताओं की चर्चा करेंगे...।

... **गतांक से आगे**.....

पाँचवी कसौटी : जो शक्तियों और गुणों में अनंत हो - परमात्मा के बारे में कहावतों में आता है कि जिसकी महिमा अपरम-अपार हो। **कहावत भी है कि परमात्मा के गुणों की महिमा के लिए यदि पूरे समंदर की स्याही बना दें, सारे जंगल की लकड़ी को कलम बना दें और सारी धरती को कागज बना दें और स्वयं ज्ञान की देवी सरस्वती भी उसकी महिमा लिखने बैठें तो शब्द कम पड़ जायेंगे। ऐसे परमात्मा की महिमा नहीं लिखी जा सकती। इसीलिए उसे अनंत कहते हैं, गुणों का सागर कहते हैं, शक्तियों का सागर कहते हैं आदि-आदि। ऐसी कोई रचना नहीं हो सकती।**

उपरोक्त पाँचों कसौटी पर कोई खरा उतरता है तो उसे भगवान की संज्ञा हम दे सकते हैं।

अन्य मान्यता : 1. कहा जाता है सृष्टि में तीन का खेल है, पहला पुरुष, परमपुरुष, तीसरा प्रकृति है। ये तीनों सत्तायें अजर हैं, अमर हैं, अविनाशी हैं। पुरुष और प्रकृति में समय प्रति समय परिवर्तन हो जाता है परन्तु उनका विनाश नहीं हो सकता। जब पुरुष भी एक सत्ता है, प्रकृति भी एक सत्ता है और परम-पुरुष भी एक सत्ता है, तो इससे क्या सिद्ध होता है, कौन किसका रचनाकार है! इस पर विचार के लिए आप स्वतंत्र हैं। लेकिन इतना हम अवश्य कहना चाहेंगे कि परमात्मा, आत्मा और प्रकृति दोनों से श्रेष्ठ है क्योंकि उसमें कभी परिवर्तन नहीं आता।

2.कहते हैं कि आत्मा ही परमात्मा है। यदि आत्मा ही परमात्मा है तो कौन किसको याद करे! हम आरती में ये गाते हैं कि ``तुम मात-पिता हम बालक तेरे'' तो यही हुआ ना कि हम उसके बच्चे हैं।

3. उदाहरणस्वरूप सभी कहते हैं कि आत्मा परमात्मा का अंश है। यदि आत्मा अंश है तो आज दुःखी क्यों है, जबकि परमात्मा कभी भी दुःखी नहीं हो सकता। वह दुःख हर्ता, सुख

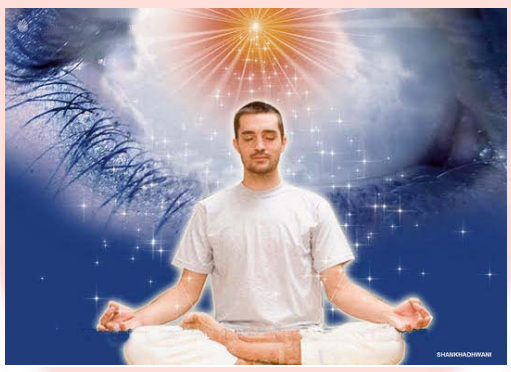

कर्ता है और हम दुःखी हैं, यह कैसे सम्भव है! आत्मा, परमात्मा का वंश है ना कि अंश। हम लौकिक में पिता जैसे दिखते हैं, ना कि खुद पिता हैं। ठीक उसी प्रकार आत्मा, परमात्मा जैसी दिखती है, ना कि वह परमात्मा है।

4. इसके अलावा भी लोग कहते हैं कि आत्मा परमात्मा में समा जाती है, जिस प्रकार बूंद सागर में समा जाती है। परन्तु ये गलत मान्यता है। जल एक तत्व है, तत्व, तत्व में समा सकता है लेकिन आत्मा-परमात्मा चैतन्य शक्ति हैं। एक आध्यात्मिक ऊर्जा हैं। ऊर्जा कभी नष्ट व उत्पन्न नहीं की जा सकती। यदि आत्मा, परमात्मा में समा गई तो उसका अस्तित्व खत्म हो जायेगा। फिर वह अविनाशी कहां से ठहरी।

5. सभी परमात्मा को सर्वव्यापी मानते हैं अर्थात् कण-कण में विराजमान कहते हैं। यदि परमात्मा हर जगह है या हर स्थान पर है तो हममें और आपमें भी हो गया। परमात्मा तो शक्तियों का सागर है, गुणों का सागर है, सुख का सागर है तो दुःख क्यों है? यदि वह हर जगह है तो दुःख नहीं होना चाहिए। यदि हर जगह है तो इससे एक बात सिद्ध होती है कि हमारे और आपके अन्दर भी परमात्मा है। तो हम क्यों कहते हैं कि हे प्रभु! दुःख हरो, हे प्रभु! दर्शन दो। हम दर्शन आदि के लिए विशेष रूप से मन्दिर जाते हैं। इसका मतलब परमात्मा हमारे अन्दर नहीं है। आज हर एक मनुष्य लूला-लंगड़ा, काना, कुब्जा है तो क्या आज हर परमात्मा का ये हाल है। ऐसा ही है ना! यदि जानवर कुत्ता, बिल्ली, बंदर आदि में परमात्मा का निवास स्थान है तो वे हानि क्यों पहुँचाते हैं। जब आप दुःखी होते हैं तो कहते हैं हे प्रभु, हे भगवान या ऊपर वाला सबकुछ जानता है, ना कि आप यह कहते हैं कि बगल वाला जानता है। आपकी अंगुली ऊपर की तरफ उठती है या इशारा करती है। इससे सिद्ध है कि परमात्मा यहाँ, वहाँ नहीं है। आपको पता नहीं है, वो बात अलग है।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-19

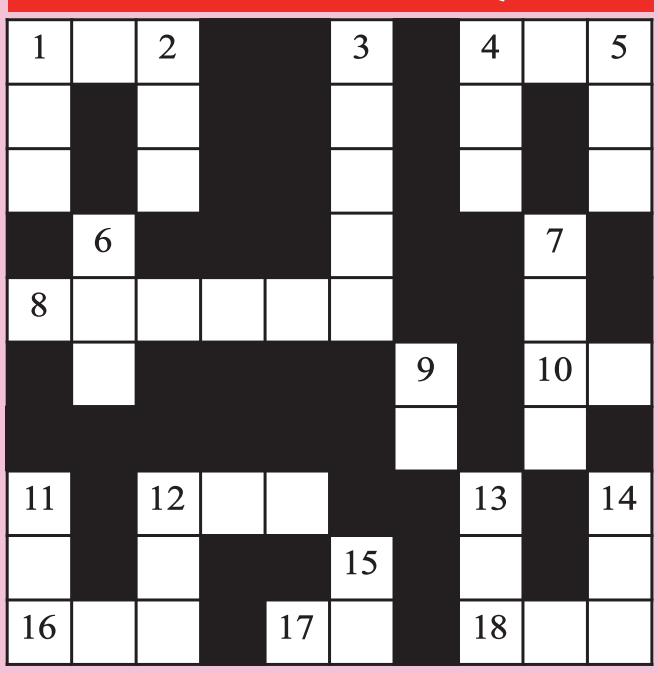

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

सद्गुणों को धारण कर गुणमूर्त बनो

ऊपर से नीचे

1. हमारे विचार उच्च और जीवन .... युक्त हो (3)
2. कार्यव्यवहार में .... हमें निडर बनाती है (3)
3. .... के गुण से हम लोगों को खुशी बाँट सकते हैं (5)
4. जीवन में कदम-कदम पर हमें विवेक और .... से काम लेना चाहिए (3)
5. .... का गुण धारण करो तो सब नमन करेंगे (3)
6. विवेक और .... हमें महापुरुष बना देंगे (3)
7. जीवन में कोई भी योजना बनाने के लिए .... होना आवश्यक है (4)
9. एक परमात्मा का .... ही निःस्वार्थ है (2)
11. हमारे कर्म श्रेष्ठ, मन निर्मल और वाणी .... हो (3)
12. .... व्यक्ति ही जीवन में आगे बढ़ सकता है (3)
13. सफलता के लिए खुद में और परमात्मा में .... होना बहुत ज़रूरी है (3)
14. .... से हम सफलता पा सकते हैं (3)
15. अच्छे कर्म का फल पाने के लिए .... धारण करना है (2)

बायें से दायें

1. विकट परिस्थितियों का सामना करने के लिए जीवन में .... का होना बहुत आवश्यक है (3)
4. सम्मान देंगे तो .... मिलेगा (3)
8. .... हमें लोगों के आदर का पात्र बनाती है (6)
10. उपकार, ... और क्षमा मानव के परम कर्त्तव्य हैं (2)
12. जीवन की विषम परिस्थितियों में हमें .... होकर आगे बढ़ते जाना है (3)
16. हमें दुखियों और गरीबों पर .... कर शुभभावना रखनी है (3)
17. आध्यात्मिक राह पर चलने के लिए .... की ज़रूरत होती है (2)
18. यह विश्व एक परिवार है, अतः हमें सबके साथ .... युक्त व्यवहार करना चाहिए (3)

- ब्र.कु.पायल,बोरीवली लोखंडवाला

सिकंदराबाद। `श्रीमद्भगवद्गीता की शक्ति का अन्वेषण' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं तेलंगाना विधान परिषद के अध्यक्ष के.स्वामी गौड, गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल प्रसिद्ध गज़ल गायक श्रीनिवास, ब्र.कु मंजू , ब्र.कु.उषा व ब्र.कु. कुलदीप।

हैदराबाद। सी.रामू जी राव को ईश्वरीय सौगात भेंट कर ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. मंजू,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. मंजू,मराडपल्ली, ब्र.कु. सत्यनारायण व ब्र.कु. बोस।

नांदेड़-महा.। गोदावरी को.अर्बन बैंक की अध्यक्षा व विधायक की धर्मपत्नी सौ.राजश्री पाटिल कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. शिवकन्या, जिला परिषद की महिला व बालकल्याण विभाग की सभापति वंदना लहानकर, जिला परिषद सदस्या संगीता पाटिल व अन्य।

पन्ना। बसंत पंचमी महोत्सव पर निकाली गई शोभा यात्रा में तहसीलदार डॉ.बबीता राठौर, शासकीय विद्यालय की प्रिंसीपल, कवि डॉ.सुरेश पराग तथा ब्र.कु.सीता।

पटियाला। आध्यात्मिक कार्यक्रम के अवसर पर समाजसेवी भगवान दास जुनेजा, ब्र.कु. शान्ता, ब्र.कु. डॉ.राकेश तथा ब्र.कु. राखी।

राजकोट। पुलिस कमिश्नर मोहन झा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अंजु तथा ब्र.कु.रेखा।